रचनावादी विधा का कक्षाओं में उपयोग

रमाकर रायज़ादा*
निधि तिवारी**

जीवन में स्कूली शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि इसी से जीवनवृत्ति (कैरियर) का निर्धारण होता है। किंतु आज की शिक्षा प्रणाली के रटंत विद्या पर आधारित होने के कारण परीक्षा देने के बाद ही विद्यार्थी तैयार की गई अवधारणाओं और ज्ञान को भूल जाते हैं एवं शिक्षित होने के बाद भी रोज़गार योग्य ज्ञान और कौशल उनमें नहीं होता। इसलिए यह आवश्यक है कि हम शिक्षण पद्धतियों का परिष्कार करके विद्यार्थियों को स्वयं करके सीखने दें और शिक्षा को रटंत से मुक्त करके जीवन के वास्तविक ज्ञान से जोड़ें। यही शिक्षा की रचनावादी विधा है। आज की परिस्थिति में इस विधा के उपयोग की परिस्थितियों का आकलन करने के लिए प्रस्तुत अध्ययन जवाहर नवोदय विद्यालय, श्यामपुर जिला सीहोर (मध्यप्रदेश) के कक्षा 10 के विद्यार्थियों पर किया गया है। विद्यालय के सभी शिक्षक प्रशिक्षित हैं तथा विद्यालय में सतत् और समग्र मूल्यांकन (Continuous and Comprehensive Evaluation) प्रणाली भी लागू है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि विद्यालयों में रचनावादी विधा के उपयोग के अच्छे अवसर उपलब्ध हैं। विद्यार्थी भी चाहते हैं कि उन्हें नवीनतम विधियों से शिक्षित किया जाए। शिक्षक भी गतिविधि के माध्यम से कक्षाओं में पढ़ाते हैं किंतु उनके नियोजन और क्रियान्वयन में प्रभावशीलता की आवश्यकता है।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में स्कूली शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान होता है, क्योंकि यह अपने तीन स्तरों – प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर उचित ज्ञान व व्यक्तित्व का निर्माण करती है। शिक्षा के लक्ष्यों का निर्धारण समाज द्वारा होता है और उसी के अनुसार पाठ्यवस्तु और अध्यापन विधा का निर्धारण किया जाता है। इस संदर्भ में *शिक्षा नीति दस्तावेज़* और *पाठ्यचर्या की रूपरेखा* संपूर्ण स्कूली शिक्षा प्रणाली के दिशा निर्धारण में महत्वपूर्ण हैं। भारत में शिक्षा नीतियाँ 1968 और 1986 (1992 की कार्यान्वयन योजना के साथ) में बनी हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) द्वारा

**एसोसिएट प्रोफ़ेसर* (कॉमर्स), आर.आइ.ई., भोपाल-462013
***एसोसिएट प्रोफ़ेसर* (इंग्लिश), आर.आइ.ई., भोपाल-462013

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — 1975, 1988, 2000 और 2005 में बनाई गई थीं। इस शृंखला में नवीनतम, *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा*-2005 में निम्नलिखित निर्देशक सिद्धांतों को अपनाया गया–

1. ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ना,
2. शिक्षा का रटंत प्रणाली से मुक्त होना सुनिश्चित करना,
3. बच्चों के लिए चहुँमुखी विकास के अवसरों को सुनिश्चित करना,
4. परीक्षा को कक्षा की गतिविधियों से जोड़कर अपेक्षाकृत लचीला बनाना, और
5. एक ऐसी अधिभावी पहचान का विकास करना जिसमें प्रजातांत्रिक राज्य व्यवस्था के अंतर्गत राष्ट्रीय चिंताएँ समाहित हों।

विद्यार्थी शिक्षा प्रणाली के प्रमुख हितग्राही और अध्यापन कला के प्रत्यक्ष उपभोक्ता हैं। इसलिए कक्षाओं में चलने वाली शिक्षण प्रक्रिया के बारे में उनके विचार, आकलन, और सुझाव कक्षा शिक्षण में गुणवत्ता लाने में अपना विशेष स्थान रखते हैं। सामान्य शालेय शिक्षा की दसवीं कक्षा में आते-आते विद्यार्थी कक्षा में चल रही शिक्षण विधियों पर परिपक्वता से अपने निष्पक्ष और मौलिक विचार दे सकते हैं।

यद्यपि हम लगभग शत-प्रतिशत बच्चों को प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश दिलाकर उनके ठहराव की बात करते हैं किंतु फिर भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एक चुनौती है तथा माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में रोजगारपरकता का अभाव पाया जाता है। इस बारे में सामान्यत: कहा जाता है कि अधिकांश स्नातक और स्नातकोत्तर नियुक्ति के योग्य नहीं होते और यह भी माना जाता है कि यदि सही कौशल हो तो हाईस्कूल पास को भी नियुक्ति हेतु चुना जा सकता है। आज हमारे देश की औपचारिक शिक्षा में एक बड़ी कमी है कि विद्यार्थी प्रवेश लेते हैं, पास करके अपनी शिक्षा पूरी कर लेते हैं, किंतु उनमें रोज़गार-योग्य योग्यताओं, क्षमताओं और कौशलों का विकास नहीं हो पाता है। इसमें हमारी शिक्षा प्रणाली और शिक्षण प्रक्रियाओं को ही मूल रूप में दोषी कहा जा सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन कक्षा-शिक्षण गतिविधियों के बारे में विद्यार्थियों के मूल विचारों पर शोधात्मक अध्ययनों की शृंखला में लिया गया है।

उद्देश्य

1. स्कूल शिक्षण के गुणवत्तापूर्ण आयामों पर विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और अपेक्षाओं पर प्रकाश डालना,
2. कक्षा शिक्षण में रचनावादी विधा के उपयोग का आकलन करना,
3. कक्षा शिक्षण में रचनावादी विधा के प्रभावी उपयोग हेतु सुझाव देना, और
4. गुणवत्तापूर्ण कक्षा-शिक्षण के उपाय सुझाना।

शोध प्रश्न —अध्ययन में निम्नलिखित शोध प्रश्नों का प्रत्युत्तर दिया गया है–

1. विद्यार्थी अपने शिक्षकों से क्या अपेक्षाएँ रखते हैं?
2. क्या विद्यार्थी वर्तमान कक्षा-शिक्षण विधाओं से संतुष्ट हैं? यदि नहीं, तो वे कक्षा-शिक्षण प्रक्रियाओं में किस प्रकार के परिवर्तन चाहते हैं?
3. क्या आज की परिस्थिति में रचनावादी विधा के लिए विद्यार्थी वर्ग तैयार है?

4. रचनावादी विधा को किस प्रकार कक्षाओं में प्रभावी रूप से लागू किया जा सकता है?

सीमाएँ : अध्ययन की निम्नलिखित सीमाएँ हैं:

1. अध्ययन माध्यमिक स्तर के कक्षा 10 के विद्यार्थियों के विचारों तक सीमित है।
2. अध्ययन में मध्यप्रदेश में स्थित सीहोर जिले के जवाहर नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों को लिया गया है।
3. कक्षा 10 के इन विद्यार्थियों को ही विद्यार्थी वर्ग का प्रतिनिधि माना गया है।

अध्ययन विधि

(अ) न्यादर्श का चुनाव —हमारे देश में लगभग 68.84 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण है। इस क्षेत्र के प्रतिभावान बालक-बालिकाओं के सर्वांगीण विकास के लिए देश के ग्रामीण क्षेत्रों में 595 जवाहर नवोदय विद्यालय स्थापित हैं, जिनमें प्रवेश परीक्षा के माध्यम से ग्रामीण अंचल के विद्यार्थियों को कक्षा 6 में प्रवेश देकर कक्षा 12 तक शिक्षा दी जाती है। अत: कक्षा 10 तक आते-आते वे परिपक्व होकर शिक्षा पद्धति पर अपने विचार दे सकते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए जवाहर नवोदय विद्यालय, श्यामपुर, जिला सीहोर (मध्यप्रदेश) के 73 विद्यार्थियों के विचार और सुझाव लेने के लिए प्रारूप पर उनके प्रत्युत्तर लिए गए।

(ब) उपकरण का उपयोग — कक्षा-शिक्षण विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच एक विषयवस्तु पर होने वाली अंत:क्रिया है, जिसमें विद्यार्थियों के ज्ञान, अवबोध, कौशल और अनुप्रयोग क्षमताओं का विकास होता है। कक्षाओं में रचनावादी विधा के उपयोग का वातावरण, विधा के लिए विद्यार्थियों में उत्सुकता, शिक्षकों द्वारा विधा का कक्षाओं में उपयोग, विधा के उपयोग में आने वाली बाधाओं और विद्यार्थियों में स्वाध्याय की आदतों के विकास का आकलन करने के लिए मिश्रित रूप में कथन और बहुविकल्पों पर उपकरण में विद्यार्थियों के प्रत्युत्तर लिए गए। इसके साथ ही विद्यालय में कक्षाओं के शिक्षण में आने वाली समस्याओं, उन समस्याओं को दूर करने के उपायों और सामान्य रूप से कक्षा शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए सुझाव लेने का प्रावधान भी उपकरण में रखा गया।

(स) आँकड़ों का संकलन — अनुसंधान के लिए उपयोग किए जाने वाले उपकरण/प्रपत्र को सामान्य विद्यार्थियों की समझ के अनुरूप हिंदी में बनाकर विद्यालय के 73 विद्यार्थियों को शोध के महत्वपूर्ण लक्ष्य बताकर उनके विचार और सुझाव प्रत्युत्तर के रूप में लिखने के लिए दिया गया। विद्यार्थियों का निडर, निष्पक्ष और स्पष्ट उत्तर लेने के लिए उन्हें प्रपत्र पर अपना नाम न लिखने के लिए भी कहा गया। विद्यार्थियों के विचारों और सुझावों की पुष्टि के लिए उनसे चर्चाओं का आयोजन भी किया गया।

(द) संकलित आँकड़ों का विश्लेषण — शिक्षण के विभिन्न आयामों पर विद्यार्थियों के विचारों व सुझावों का संकलन करने के लिए भरे गए प्रपत्रों का ध्यानपूर्वक विश्लेषण किया गया। उनकी एक सामान्य पैमाने पर तुलना करने के लिए विश्लेषण में प्रतिशत को माध्यम के रूप में उपयोग किया गया। उनके विचार बिंदुओं को निम्नलिखित पाँच समूहों में रखा गया–

1. रचनावादी विधा हेतु कक्षाओं में उपयुक्त वातावरण,

2. रचनावादी विधा को अपनाने के लिए विद्यार्थियों की उत्सुकता,
3. शिक्षकों द्वारा कक्षाओं में रचनावादी विधा का उपयोग,
4. रचनावादी विधा के उपयोग में आने वाली बाधाएँ, और
5. विद्यार्थियों में स्वाध्याय की आदतों का विकास।

विद्यार्थियों से उनकी कक्षा शिक्षण में आने वाली समस्याओं और उन समस्याओं को दूर करने के उपायों पर भी अभिमत लेकर उनके प्रत्युत्तरों की बारंबारता के अनुसार भार (महत्त्व) दिया गया। विश्लेषण के परिणामों की विद्यार्थियों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं के विचारों से कारण, सुझाव और संस्तुतियों के साथ व्याख्या की गई है।

अध्ययन के निष्कर्ष

(अ) रचनावादी विधा हेतु कक्षाओं में उपयुक्त वातावरण — विद्यार्थी विषयवस्तु को रटकर परीक्षा पास कर लेते हैं इसलिए उनमें पठित विषयवस्तु के व्यावहारिक अनुप्रयोग की क्षमताओं का विकास नहीं हो पाता। रचनावादी शिक्षण विधा में अधिगम एक पेचीदा प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी की पूर्वधारणाओं और ज्ञान पर शिक्षक उन्हें विषयवस्तु पर सक्रिय करके चर्चाओं और गतिविधियों के माध्यम से आवश्यक अधिगम परिवर्तन लाते हैं।

विद्यार्थियों को पाठ्यवस्तु पर सक्रिय करने के लिए तथा कक्षा में उस पर एक सजीव वातावरण के निर्माण के लिए पाठ्यवस्तुओं पर चार्ट-पोस्टर आदि लगाए जाते हैं तथा उन्हें समय-समय पर अद्यतन किया जाता है। ऐसे वातावरण में विद्यार्थियों को अपने मित्रों के साथ मिलकर पढ़ाई करने और स्वाध्याय के अवसर प्राप्त होते हैं। सारणी 1 में कक्षाओं में रचनावादी विधा के उपयोग की पूर्वापेक्षाओं को इन तीन आयामों से परखा गया है–

सारणी 1 को देखने से ज्ञात होता है कि 94.52 प्रतिशत विद्यार्थियों के मतानुसार उनकी पाठ्यवस्तु से संबंधित चार्ट व पोस्टर कक्षाओं में लगाकर वातावरण को विषयमय बनाया जाता है, किंतु उनके अद्यतन किए जाने पर 66.67 प्रतिशत ने ही सकारात्मक प्रत्युत्तर दिया अर्थात् लगाए गए चार्ट और पोस्टरों को

सारणी 1
कक्षाओं में रचनावादी विधा के उपयोग का वातावरण

क्रम सं.	विवरण	हाँ (प्रतिशत)	नहीं (प्रतिशत)
1.	कक्षाओं में विषयवस्तु पर चार्टे और पोस्टर लगाये जाते हैं।	94.52	05.48
2.	कक्षाओं में लगे चार्ट और पोस्टरों को समय-समय पर अद्यतन किया जाता है।	66.67	33.33
3.	विद्यार्थियों को स्वाध्याय और मित्रों के साथ मिलकर पढ़ाई करने की आदत है।	83.33	16.67

सारणी 2
रचनावादी विधा अपनाने के लिए विद्यार्थियों में तत्परता

क्रम सं.	विवरण	हाँ (प्रतिशत)	नहीं (प्रतिशत)
1.	विद्यार्थी कक्षा में पढ़ी विषयवस्तु के अलावा सोचने की ज़रूरत महसूस नहीं करते।	22.22	77.78
2.	शिक्षक ज्ञान के सर्वोत्तम स्त्रोत हैं और वे ज्ञान को पाठ्यवस्तु में बदल देते हैं।	46.48	53.52
3.	पुस्तकालय में स्वाध्याय करने से अच्छे अंक आ सकते हैं।	58.33	41.67

समय-समय पर बदला जाना चाहिए। किंतु मित्रों के साथ मिलकर पढ़ना और स्वाध्याय करने की आदत के लिए 83.33 प्रतिशत ने अपनी सहमति दी है, जो रचनावादी विधा के उपयोग का अच्छा संकेत है।

(ब) रचनावादी विधा अपनाने के लिए विद्यार्थियों में उत्सुकता — रचनावादी विधा के अंतर्गत विद्यार्थियों को स्वयं सक्रिय होकर व्यावहारिक रूप में ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता होती है तथा विषयवस्तु के लिए उनकी शिक्षक पर निर्भरता कम होती है और वे स्वाध्याय के द्वारा ज्ञानार्जन और ज्ञानवर्द्धन करते हैं। इन बिंदुओं पर सारणी 2 में प्रकाश डाला गया है–

सारणी 2 का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि 77.78 प्रतिशत विद्यार्थी शिक्षक के द्वारा कक्षाओं में पढ़ाई गई विषयवस्तु के अतिरिक्त भी सोचने की आवश्यकता का अनुभव करते हैं। उन पर ज्ञान के एकमात्र सर्वोत्तम स्त्रोत के रूप में 46.48 प्रतिशत विद्यार्थियों का विश्वास है। यहां हमारी पुरानी गुरू-शिष्य परंपराओं के कारण विद्यार्थी ऐसा अनुभव करते हैं, किंतु फिर भी शिक्षकों के आदर के साथ-साथ इसमें परिवर्तन की आवश्यकता है। इसके साथ ही केवल 58.33 प्रतिशत विद्यार्थियों को ही पुस्तकालय में स्वाध्याय करने से अच्छे अंक आने का विश्वास बना है।

अत: इस क्षेत्र में अभी और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों में पुस्तकालय उपयोग की आदतों का विकास करना होगा। (इससे उन्हें शिक्षक के अतिरिक्त ज्ञान के अन्य स्त्रोतों का आभास भी होगा और वे पाठ्यपुस्तकों में लिखित या शिक्षक के द्वारा पढ़ाई गई अवधारणाओं के अतिरिक्त भी समझेंगे।)

(स) रचनावादी विधा का शिक्षकों द्वारा कक्षाओं में उपयोग — पाठ्यवस्तु के शिक्षण में शिक्षण-विधियों और शिक्षण सहायक सामग्री के उपयोग के चयन का निर्णय शिक्षकों को ही करना होता है। शैक्षिक परिदृश्य में पाठ्यवस्तु पर कक्षा-शिक्षण हेतु होने वाली छात्र-शिक्षक अनुक्रिया में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान होता है क्योंकि शिक्षकों को ही नेतृत्व प्रदान करना होता है। रचनावादी विधा में विद्यार्थियों को पाठ्यवस्तु पर चर्चा करने का खुला अवसर दिया जाता है, इसके बाद आई अवधारणाओं

सारणी 3
शिक्षकों द्वारा रचनावादी विधा को कक्षाओं में अपनाना

क्रम सं.	विवरण	हाँ (प्रतिशत)	नहीं (प्रतिशत)
1.	विद्यार्थियों को कक्षा में पाठ्यवस्तु पर चर्चा करने का अवसर प्राप्त होता है।	77.78	22.22
2.	पाठ्यवस्तु पर चर्चा में आई अवधारणाओं को संक्षेपित करके ही शिक्षक पढ़ाते हैं।	51.42	48.58
3.	शिक्षक कक्षा में गतिविधि के माध्यम से ही पढ़ाते हैं।	79.73	20.27

को आवश्यक सुधार के साथ शिक्षक द्वारा संक्षेपित किया जाता है और विद्यार्थियों को पाठ्यवस्तु में सक्रिय रूप से शामिल करने के लिए यथासंभव गतिविधियों का उपयोग किया जाना होता है। इन बिंदुओं का अनुप्रयोग सारणी 3 में दर्शाया गया है–

सारणी 3 का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि 77.78 प्रतिशत विद्यार्थियों के मतानुसार उन्हें कक्षाओं में पाठ्यवस्तु पर चर्चा करने का अवसर प्राप्त होता है, और 51.52 प्रतिशत के अनुसार कक्षाओं में चर्चा के फलस्वरूप आने वाली अवधारणाओं को ही संक्षेपित करके शिक्षक पढ़ाते हैं। इसके साथ ही 58.33 प्रतिशत विद्यार्थियों ने यह भी मत व्यक्त किया कि उनकी कक्षाओं में गतिविधि के माध्यम से शिक्षण-कार्य किया जाता है।

(द) रचनावादी विद्या के उपयोग में आने वाली बाधाएँ – हमारी शिक्षा व्यवस्था एक लंबे समय से चली आ रही रटंत प्रणाली से बुरी तरह जकड़ गई है और अब भी कक्षाओं में इसका स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। विद्यार्थियों को कक्षाओं में पाठ्यवस्तु पर होने वाले प्रश्नों के उत्तर पुस्तक या शिक्षक के शब्दों में ही देने होते हैं, वे शिक्षक द्वारा बताई गई या पुस्तक में लिखी विषयवस्तु को ही अपने लिए पर्याप्त समझते हैं, क्योंकि आने वाली परीक्षाओं में उसे लिखकर ही उन्हें अच्छे अंक मिलते हैं। वे प्रोजेक्ट, असाइनमेंट, गतिविधि आदि के माध्यम से स्वयं करके सीखने के अवसरों का सही इस्तेमाल नहीं करते एवं स्वाध्याय की आदत भी उनमें नहीं होती। सारणी 4 में इन बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया है:

सारणी 4
रचनावादी विधा के उपयोग में आने वाली बाधाएँ

क्रम सं.	विवरण	हाँ (प्रतिशत)	नहीं (प्रतिशत)
1.	विषयवस्तु पर प्रश्नों के उत्तर शिक्षक या पुस्तक के शब्दों में ही देने होते हैं।	50.00	50.00

2.	शिक्षक द्वारा पढ़ाई गई या पुस्तक में लिखी विषयवस्तु ही मेरे लिए पर्याप्त है।	20.27	79.73
3.	मुझे प्रोजेक्ट, असाइनमेंट या गतिविधि के माध्यम से स्वयं सीखने की आदत है।	36.36	63.64
4.	शिक्षक यदि प्रकरण बताकर मुझे स्वयं स्वाध्याय करने दें तो अच्छा है।	21.13	78.87

सारणी 4 का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि आधे विद्यार्थियों के मतानुसार कक्षा में होने वाले प्रश्नों के उत्तर शिक्षक रटी-रटाई किताबी या उनके स्वयं के बताए शब्दों में ही चाहते हैं तथा 20.27 प्रतिशत छात्र भी पाठ्यपुस्तकों में दी गई या शिक्षकों द्वारा बताई गई विषयवस्तु को ही अपने लिए पर्याप्त समझते हैं। वे पाठ्यपुस्तक के बाहर के ज्ञान को महत्त्व नहीं देते। केवल 36.36 प्रतिशत विद्यार्थियों को ही प्रोजेक्ट, असाइनमेंट, गतिविधि आदि के माध्यम से स्वयं सीखने की आदत है। 21.13 प्रतिशत विद्यार्थियों को ही स्वाध्याय की आदत है और वे चाहते हैं कि उन्हें प्रकरण बताकर ही छोड़ दिया जाए।

कक्षाओं में अंतःक्रियायुक्त सजीव वातावरण का निर्माण

रचनावादी विधा के अंतर्गत कक्षा में शिक्षक की ओर से एकतरफा सूचनाओं का प्रवाह न होकर विद्यार्थियों में आपस में और विद्यार्थियों और शिक्षक के बीच पाठ्यवस्तु पर चर्चा के माध्यम से पढ़ाई होनी चाहिए। किंतु कक्षाओं में विद्यार्थी बोलते नहीं और वे शिक्षकों द्वारा बताई गई बातों को ही सुनते हैं। इसके कारणों को दो भागों में बाँट कर अध्ययन किया गया है–

(अ) विद्यार्थियों के आंतरिक कारण: अध्ययन में केवल 20.59 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा कि वे कक्षाओं में होने वाली चर्चा में सक्रिय भाग लेकर अपने विचार रखते हैं, शेष 79.41 प्रतिशत विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रकार के कारण बताए जो सारणी 5 में अपने महत्त्व के साथ दर्शाए गए हैं–

सारणी 5

रचनावादी विधा के उपयोग न हो पाने में विद्यार्थियों के आंतरिक कारण

क्रम सं.	विवरण	प्रतिशत भार
1.	विद्यार्थियों का बोलने में झिझक महसूस करना।	39.72
2.	शिक्षकों की ओर से विद्यार्थियों को बोलने की आज्ञा न होने से डर लगना।	10.29
3.	उत्तर गलत हो जाने पर शिक्षक के चिढ़ जाने का डर लगना।	10.29
4.	बोलने में अन्य विद्यार्थियों के हस्तक्षेप करने का भय।	08.82

5.	बोलने के लिए सोचना और तब तक मौका निकल जाना।	04.41
6.	पाठ्यक्रम अधिक होने से समयाभाव रहना और न बोलना।	02.94
7.	शिक्षकों का खुली चर्चा के आह्वान न होने के कारण डर लगना।	01.47
8.	बोलने पर अन्य बच्चों के हँसने का भय।	01.47

सारणी 5 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों के द्वारा कक्षाओं में होने वाली चर्चाओं में भाग न लेने का प्रमुख कारण उनकी आंतरिक झिझक है, यह झिझक अनुसूचित जनजातियों और प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में और भी अधिक होती है। इसके निराकरण के लिए अध्यापकों को बच्चों को कक्षा की चर्चाओं में भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, उन्हें व्यक्तिगत रूप से मौका दिया जाना चाहिए तथा चर्चाओं का प्रभावपूर्ण नेतृत्व करना चाहिए। इनसे अन्य कारण भी स्वत: नियंत्रित हो सकते हैं।

(ब) विद्यार्थियों से जुड़े बाह्य कारण— अध्ययन में पाया गया कि बाह्य कारणों के कारण केवल 04.62 प्रतिशत विद्यार्थी ही कक्षा में होने वाली चर्चाओं में सहभागिता कर पाते हैं, शेष 95.38 प्रतिशत विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रकार के कारण बताए जो सारणी 6 में अपने महत्त्व के साथ दर्शाए गए हैं –

सारणी 6 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों के द्वारा कक्षाओं में होने वाली चर्चाओं में भाग न लेने का प्रमुख बाह्य कारण शिक्षकजनित है – उनके समयबद्ध शिक्षण कार्य का प्रभावित होना (41.54), शिक्षण प्रवाह में बाधा आना (18.46), चर्चाओं को उपयुक्त नेतृत्व न देना (10.77), नोट्स न लिख पाना (10.77), समयाभाव रहना (04.62), चर्चाओं की आज्ञा न देना

सारणी 6

रचनावादी विधा के उपयोग न हो पाने में विद्यार्थियों के बाह्य कारण

क्रम सं.	विवरण	प्रतिशत भार
1.	कक्षाओं में चर्चा करने से शिक्षण का समयबद्ध कार्य प्रभावित होता है।	41.54
2.	कक्षाओं में चर्चा करने पर शिक्षक के शिक्षण प्रवाह में बाधा आती है।	18.46
3.	शिक्षक चर्चाओं का नेतृत्व नहीं कर पाते और कक्षा विषय से भटक जाती है।	10.77
4.	कक्षाओं में चर्चा करने से कक्षा में पढ़ाई गई विषयवस्तु के नोट्स नहीं लिख पाते।	10.77
5.	कक्षाओं में चर्चा करने के लिए समयाभाव रहता है।	04.62
6.	अन्य सहपाठी चर्चा में भाग नहीं लेते।	03.08
7.	शिक्षक चर्चाओं के लिए आज्ञा नहीं देते।	01.53
8.	अन्य विद्यार्थियों के हँसने, गलत होने आदि के डर के कारण झिझक।	01.53

(01.53) आदि। इन सभी कारणों को रचनावादी विधा के उपयुक्त नियोजन के माध्यम से दूर किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य कारणों, जैसे - झिझक और अन्य सहपाठियों के चर्चाओं में भाग न लेने की समस्या के लिए शिक्षकों को विद्यार्थियों को रचनावादी विधा के उपयोग के साथ सक्रिय सहभागिता के लिए उत्साहित करना होगा।

शिक्षण सुधार हेतु विद्यार्थियों द्वारा दिये गये सुझाव — विद्यार्थियों ने कक्षा-शिक्षण के लिए उपकरण पर कुछ सुझाव भी दिये। उनके कुछ सुझाव निम्न प्रकार हैं –

1. सतत् और समग्र मूल्यांकन के कार्यभार को कम किया जाना चाहिए, शिक्षकों को इसे पूरा करने में मदद करनी चाहिए तथा इसके मूल्यांकन में किसी प्रकार का पक्षपात नहीं होना चाहिए।
2. शिक्षकों को कक्षा-शिक्षण को प्राथमिकता देनी चाहिए, शिक्षण कार्य का उपयुक्त नियोजन करके नयी-नयी विधियों से शिक्षा देनी चाहिए।
3. कक्षाओं में विद्यार्थियों को विषयवस्तु पर चर्चा का उपयुक्त अवसर मिलना चाहिए, कक्षाओं में अनुशासन बनाये रखना चाहिए तथा शिक्षकों को कक्षा का प्रभावी नेतृत्व करना चाहिए।
4. कक्षा 10 में गणित और विज्ञान पढ़ने के लिए कुछ अतिरिक्त समय देने और विशेष कक्षाएँ आयोजित करने की आवश्यकता है।
5. कक्षाओं में विषयवस्तु के शिक्षण के पश्चात् संक्षिप्तीकरण करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

अध्ययन से ज्ञात होता है कि विद्यालयों में रचनावादी विधा के उपयोग को बढ़ावा देने की बहुत आवश्यकता है। विद्यार्थी भी चाहते हैं कि उन्हें नवीनतम विधियों से शिक्षण दिए जाए। शिक्षक भी गतिविधि के माध्यम से कक्षाओं में पढ़ाते हैं किंतु उनके नियोजन और क्रियान्वयन में प्रभावशीलता की आवश्यकता है। कक्षाओं में शिक्षकों को गतिविधि के माध्यम से शिक्षण कार्य करने में पाठ्यवस्तु पर हुई चर्चाओं को महत्त्व देने की आवश्यकता है। चर्चा में विद्यार्थियों द्वारा दिये गये अवधारणा बिंदुओं में शिक्षकों द्वारा आवश्यक संशोधन करते हुए उनका परिमार्जन करना चाहिए। इससे विद्यार्थी उत्साहित होंगे तथा वे रचनावादी विधा के माध्यम से स्वज्ञानार्जन भी करेंगे। अत: विद्यार्थी वर्ग और शिक्षकों की अंत:क्रिया में एक बड़े बदलाव की आवश्यकता है। विद्यार्थियों को पुस्तक के बाहर व्यावहारिक जीवन से भी ज्ञान को संबंधित करके सिखाना होगा और उन्हें गतिविधि, प्रोजेक्ट, असाइनमेंट आदि के माध्यम से स्वयं करके सीखना होगा, तभी उनकी झिझक दूर होगी और कक्षाओं में सजीव वातावरण आ सकेगा। *ज्ञान निमार्ण की प्रक्रिया में बच्चों के साथ शिक्षक को भी सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिए। ''बच्चों को ऐसे प्रश्न पूछने की अनुमति देना जिनसे वे स्कूल में सिखाई जाने वाली चीज़ों का संबंध बाहरी दुनिया से स्थापित कर सकें, उन्हें एक ही तरीके से उत्तर रटने और देने की बजाय अपने शब्दों में जवाब देने और अपने अनुभव बताने के लिए प्रोत्साहित करना- ये सभी बच्चों की समझ विकसित करने में छोटे किंतु बेहद महत्वपूर्ण कदम हैं।''(राष्ट्रीय*

पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005, एन.सी.ई.आर.टी., पृ.20)। इसके साथ ही विद्यार्थियों में पुस्तकालय के उपयोग और स्वाध्याय की आदतों का विकास भी किया जाना चाहिए। *''स्कूलों द्वारा ऐसे अवसर प्रदान किए जाने चाहिए ताकि बच्चे प्रश्न पूछ कर, वाद-विवाद करके, व्यावहारिक प्रयोग और चर्चा एवं चिंतन करके अवधारणाओं को आत्मसात करें या नये विचार रचें'' (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, एन.सी.ई.आर.टी., पृ.20–21)*

संदर्भ

एन.सी.ई.आर.टी. 2005. *नेशनल करिकुलम फ़्रेमवर्क*–2005. श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली–110016

एन.सी.ई.आर.टी. 2006. *कन्सट्रक्टिविस्ट एप्रोच टू टीचिंग एंड लर्निंग*– हैंडबुक फ़ोर टीचर्स ऑफ़ सैकेंडरी स्टेज, नयी दिल्ली

एन.वी.एस. 2013. *प्रोसपैक्टस–कम–एप्लिकेशन फ़ार्म फ़ोर जवाहर नवोदय विद्यालय सलेक्शन टैस्ट.* भोपाल— नवोदय विद्यालय समिति, एम.एच.आर.डी., गवर्न्मेंट ऑफ इडिंया http://censusindia.gov.in